1. Prevention & Mitigation
Reduce risk, build resilience
Risk assessment & hazard mapping
Safe infrastructure & land use planning
Environmental protection
Awareness & capacity building
2. Preparedness
Be ready, save lives
Early warning systems
Emergency plans & drills
Stockpiling of essential supplies
Training & community awareness
Disaster Management Cycle
Build Resilience for a Safer Tomorrow
4. Recovery
Rebuild stronger, better
Damage assessment
Rehabilitation & reconstruction
Livelihood restoration
Build back better
3. Response
Act fast, minimize impact
Search and rescue
Emergency relief and medical care
Restoration of essential services
Coordination among agencies
Safer Communities | Stronger Systems | A Resilient Future
Less Risk
Lives Protected
Sustainable Development
Resilient Communities

आपदाओं के प्रभाव

आपदा प्रबंधन से संबंधित शब्दावली

- विपदा / विपत्ति /आफत :
- आपदा :
- जोखिम :
- खतरा :
- क्षमता :
- नाजुक/संवेदनशील :

आपदा प्रबंधन – ???

आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005

भारत में आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के लागू होने के बाद आपदा प्रबंधन का परिदृश्य (Paradigm) बदल गया है।

- **रोकथाम (Prevention),**
- **शमन (Mitigation),**
- **तैयारी (Preparedness),**
- **रिस्पांस (Response),**
- **पुर्नस्थापन (Rehabilitation)**
- **पुर्ननिर्माण (Reconstruction)**

आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के अंतर्गत देश में राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तर पर आपदा प्रबंधन हेतु संरचना की कल्पना की गयी है।

- **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण**
- **राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण**
- **जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण**

आपदा प्रबंधन चक्र

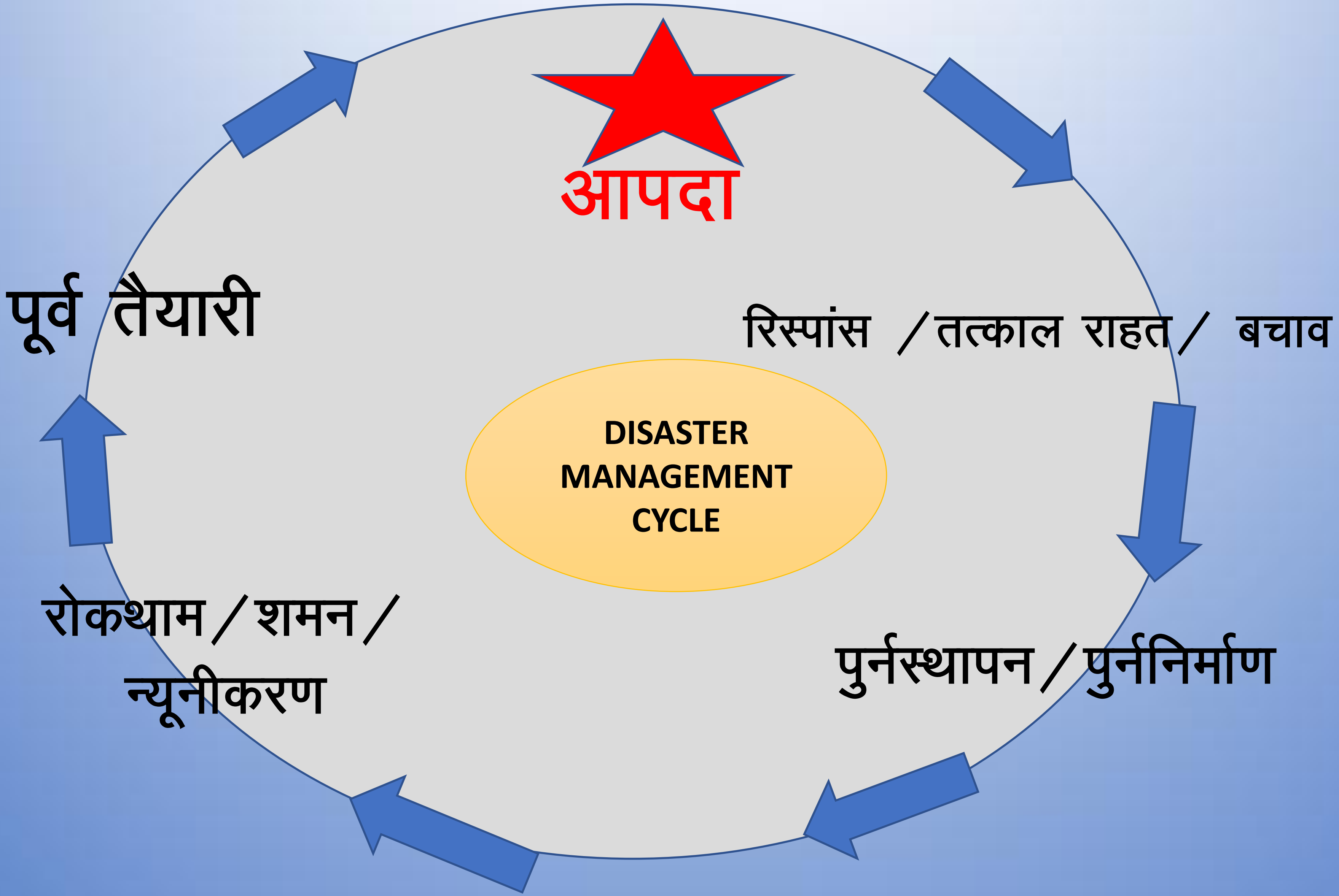

मानव जनित आपदा

- रेल दुर्घटना / सड़क दुर्घटना
- आतंकवादी हमला
- आगजनी
- डूबना
- नाव दुर्घटना
- गैस दुर्घटना
- भगदड़
- विद्युत आघात

प्राकृतिक आपदा :

- **भूकंप**
- **बाढ़**
- **सूखा या अकाल**
- **लू/ गर्म हवाएं**
- **शीतलहर**
- **चक्रवाती तूफान**
- **अगलगी**
- **बादल का फटना**
- **सर्पदंश**
- **ठनका या वज्रपात**

Multi-hazard Profile of Bihar State

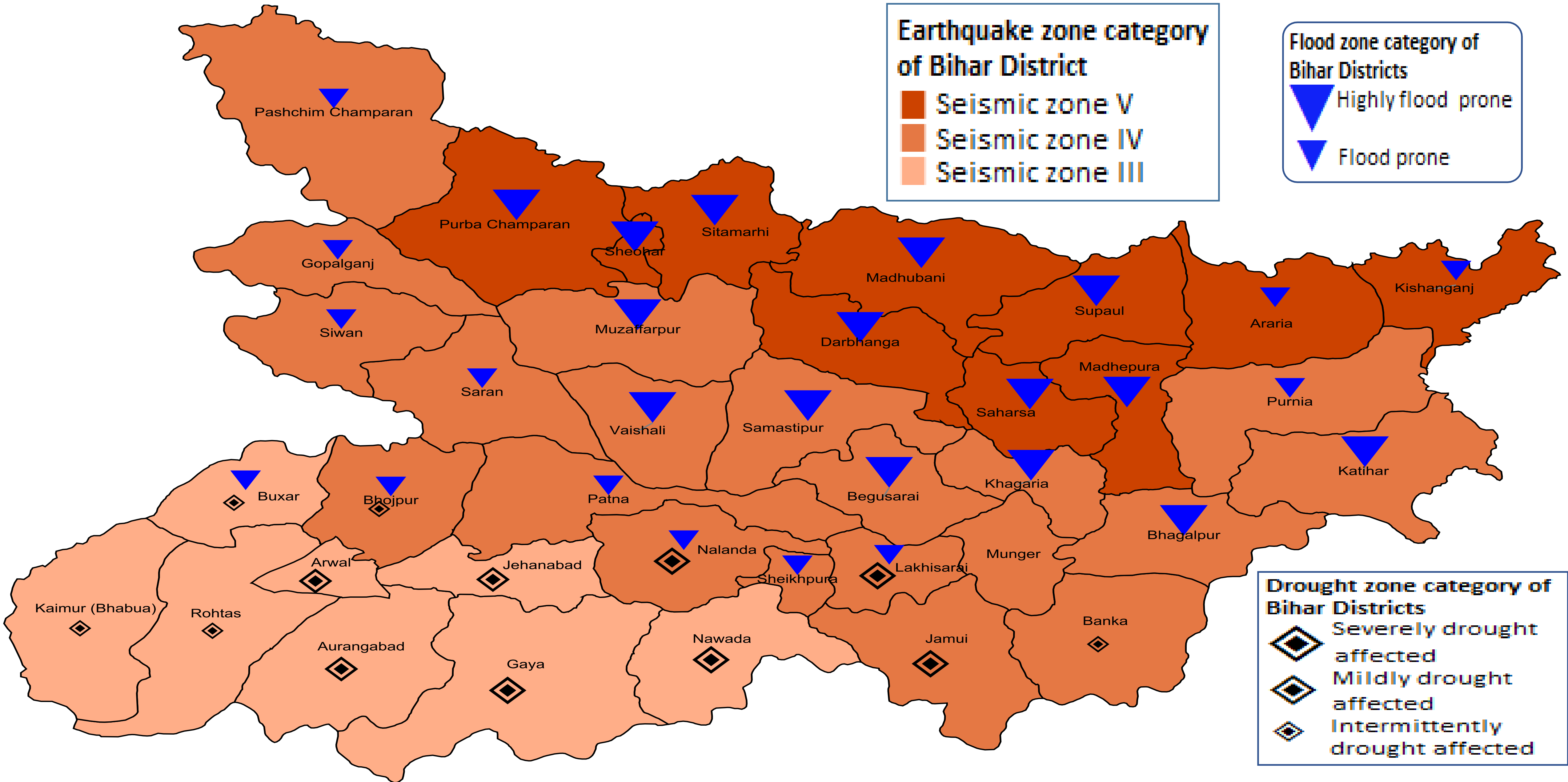

बिहार आपदा जोखिम न्यूनीकरण रोडमैप, 2015–2030

आपदा जोखिम न्यूनीकरण रोडमैप (2015–2030) के क्रियान्वयन के पाँच प्रमुख स्तंभ हैं–

- सुरक्षित ग्राम
- सुरक्षित नगर
- सुरक्षित अत्यावश्यक आधारभूत संरचनाएँ
- सुरक्षित बुनियादी सेवाएँ
- सुरक्षित आजीविका

आपदा जोखिम न्यूनीकरण रोडमैप(2015–2030)के अंतर्गत चार लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं–

- बिहार में आपदाओं से होनेवाली मौतों को वर्ष 2030 तक 75 प्रतिशत तक कम कर लिया जाएगा।
- बिहार में सड़क, रेल या नाव दुर्घटना में होनेवाली मौतों को वर्ष 2030 तक काफी हद तक कम कर लिया जाएगा।
- बिहार में आपदा से प्रभावित होने वालों की संख्या वर्ष 2030 तक 50 प्रतिशत तक कम कर लिया जाएगा।
- बिहार में आपदा से होने वाले नुकसान को वर्ष 2030 तक 50 प्रतिशत तक कम कर लिया जाएगा।

बाढ़ क्या है ?

बाढ़ से सुरक्षा के लिये क्या करें ? क्या न करें ?

- आपातकालीन किट हमेशा अपने पास रखें, जिसमें एक छोटा रेडियो, टॉर्च, बैटरी, मजबूत रस्सी, माचिस, मोमबत्ती, पानी, सूखा भोजन, खाद्य सामग्री आदि हो।
- मजबूत रस्सी एवं एक लम्बी लाठी (सांप वगैरह भगाने के लिए) हमेशा साथ रखें।
- अफवाह पर ध्यान न दें और न ही घबराएँ।
- बाढ़ के दौरान खाना ढ़क कर रखें। हल्का भोजन करें एवं उबला हुआ पानी पियें।
- ऐसा कोई भी खाद्य पदार्थ का सेवन न करें जो कि बाढ़ के पानी से प्रभावित हुआ

- चाय, चावल का पानी, नारियल पानी आदि का दस्त के समय सेवन करें और दै व अन्य उपचार के लिए अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र से संपर्क करें।
- सबसे पहले गर्म कपड़े, जरूरी दवाएँ, कीमती वस्तुएं, निजी कागज आदि को वॉटर प्रूफ बैग में डाल कर उन्हें आपातकालीन बॉक्स में अपने साथ रख लें।
- अगर पानी की गहराई की जानकारी न हो तो उसे पार न करें।
- ऐसा कोई भी खाद्य पदार्थ का सेवन न करें जो कि बाढ़ के पानी से प्रभावित हुआ हो।
- हैलोजेन की गोलियां पानी में डालकर उपयोग करें।

Basahi Village, Cheriya Bariyarpur Block, Begusarai (03 August, 2007)

भूकंप – एक प्राकृतिक आपदा

<u>क्या करें - क्या ना करें</u>

भवन का संरचनात्मक अंग मजबूत होना चाहिए

विभिन्न भवनों के संरचना अंगों में थोड़ी भिन्नता रहती है, परन्तु सामान्यतया भवन में निम्न संरचना अंग विद्यमान रहते हैं :

- नींव,
- पिलर,
- स्लैब,
- बीम, एवं
- भारवाहक दीवार

भवन का गैर–संरचनात्मक चीजें मजबूती से टँगा होना चाहिए

DUCK **COVER** **HOLD**

भूकंप से बचने का अभ्यास करें

तुर्की भूकंप

आग

अगलगी से बचाव हेतु ''क्या करें''

- रसोई घर यदि फूस का हो तो उसकी दीवाल पर मिट्‌टी का लेप अवश्य कर दें।
- आग बुझाने के लिए घर में बोरें में भरकर बालू अथवा मिट्‌टी तथा दो बाल्टी पानी अवश्य रखें।
- शार्ट सर्किट की आग से बचने के लिए बिजली वायरिंग की समय पर मरम्मत करा लें।
- पटाखे जलाते समय पानी की बाल्टी तथा रेत की पर्याप्त व्यवस्था रखें।
- जहां पर सामूहिक भोजन बनाने इत्यादि का कार्य हो रहा हो, वहाँ पर दो से तीन ड्रम पानी अवश्य रखें।
- जहाँ तक संभव हो, गर्मियों में दिन का खाना 9 बजे सुबह से पूर्व बना लें तथा रात का खाना शाम 6 बजे के बाद बनाएँ।
- भोजन बनाने के बाद चूल्हे की आग पूरी तरह से बुझा दें।
- किसी भी जलते पदार्थ को बुझा कर ही सोयें।

आग से बचाव हेतु मॉकड्रील

ठनका / वज्रपात / बिजली गिरना

क्या करें और क्या न करें

- जल्द–से-जल्द किसी पक्के मकान में चले जाएं।
- अगर ग्रुप में हैं तो आपस में 15 फीट की दूरी बना लें।
- ऐसी वस्तुएं जो बिजली की सुचालक हैं, उससे दूर रहें।
- बिजली या टेलीफोन का खंभा से दूर रहें।
- मोबाइल फोन का उपयोग कदापि न करें।
- जमीन पर कदापि न लेटें ।
- धातु की डंडी वाले छातों का उपयोग न करें।
- बिजली कड़कने की स्थिति में जो जहाँ हैं वहीं रहें, हो सके तो पैरों के नीचे सूखी चीजें जैसे लकड़ी, प्लास्टिक, सूखी बोरी या सूखे पत्ते रख लें।

अगर बिजली कड़कने का आभास हो तो अपने दोनों पैरों को आपस में सटा लें और दोनों हाथों से कानों को बंद कर अपने सिर को जमीन के तरफ यथासंभव झुका लें, लेकिन सिर को जमीन से न सटाएँ।

शीतलहर से खतरे एवं बचाव के उपाय

प्रमुख संदेश

- अनावश्यक घर से बाहर न जाएँ और यथासम्भव घर के अंदर रहें (विशेषकर वृद्ध एवं बच्चे)।
- यदि घर से बाहर जाना आवश्यक हो तो समुचित ऊनी एवं गर्म कपड़े पहन कर ही निकलें।
- ठंड से बचने के लिए बच्चों को गाती बाँध सकते हैं अर्थात बच्चों को कपड़ों से अच्छे से लपेट कर रखें।
- सवधानीपूर्वक आग की बोरसी, अंगीठी या अलाव का इस्तेमाल करें।
- बाहर निकलते समय अपने सिर, चेहरे, हाथ एवं पैर को भी उपयुक्त गर्म कपड़े से ढक लें।

लू/गर्म हवाएँ

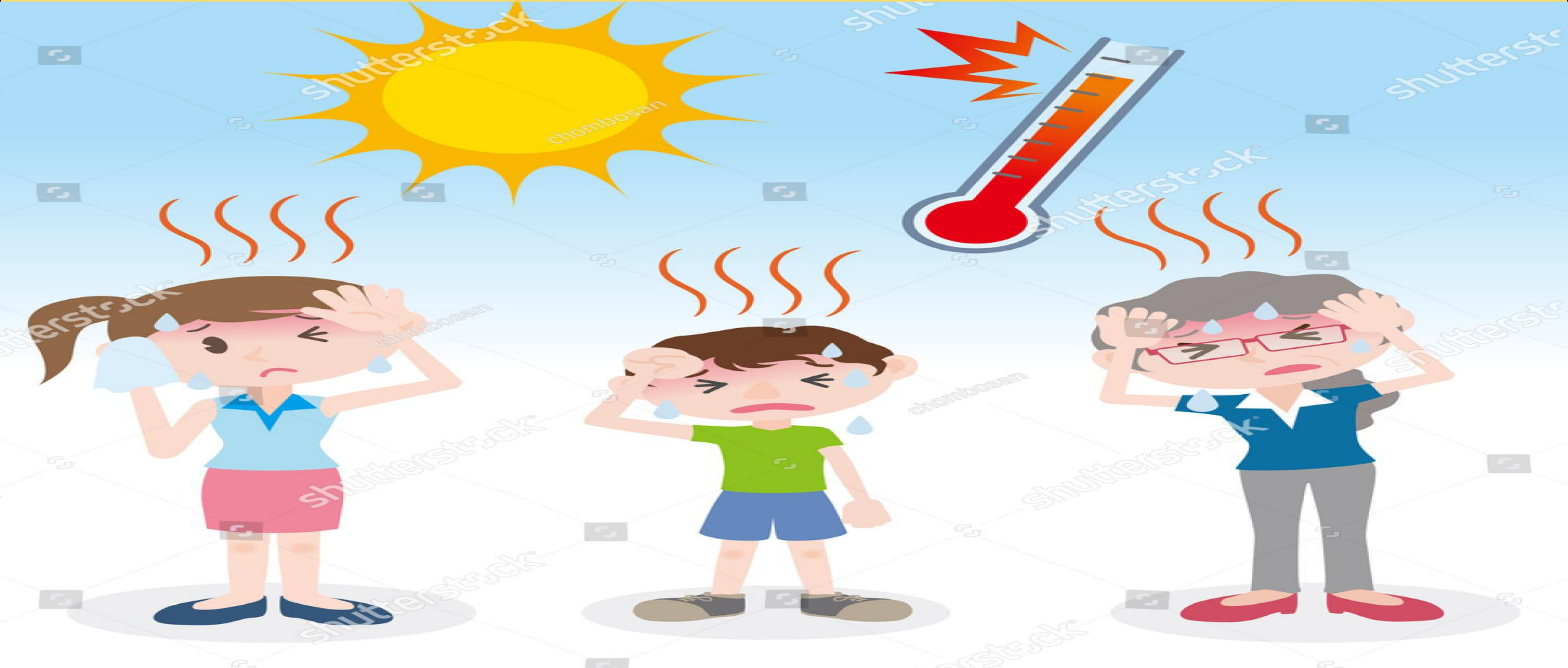

लू लगने पर क्या करें

- लू लगे व्यक्ति को छाँव में लिटा दें अगर उनके शरीर पर तंग कपड़े हो तो उन्हें ढीला कर दें अथवा हटा दें।
- लू लगे व्यक्ति का शरीर ठंढे गीले कपड़े से पोछें या ठंढ़े पानी से नहलायें।
- उस व्यक्ति को ओ0आर0एस0/नींबू–पानी, नमक चीनी का घोल, छाछ या शर्बत पीने को दें, जो शरीर में जल की मात्रा को बढ़ा सके।
- लू लगे व्यक्ति को शीघ्र नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में ले जायें।

लू लगने पर क्या न करें

1. जहाँ तक संभव हो कड़ी धूप में बाहर न निकलें।
2. अधिक तापमान में बहुत अधिक शारीरिक श्रम न करें।
3. चाय, काफी जैसे– गर्म पेय तथा जर्दा / तंबाकू आदि मादक पदार्थो का सेवन न करें।
4. ज्यादा प्रोटीन वाले भोजन जैसे– मांस, अंडा व सूखे मेवे जो शारीरिक ताप को बढ़ाते हैं, का सेवन कम करें अथवा न करें।
5. यदि व्यक्ति गर्मी या लू के कारण उल्टियां करें या बेहोश हो तो उसे कुछ भी खाने–पीने को न दें।
6. बच्चों को बंद वाहनों में अकेला न छोड़ें।

नौका दुर्घटनाओं की रोकथाम के उपाय

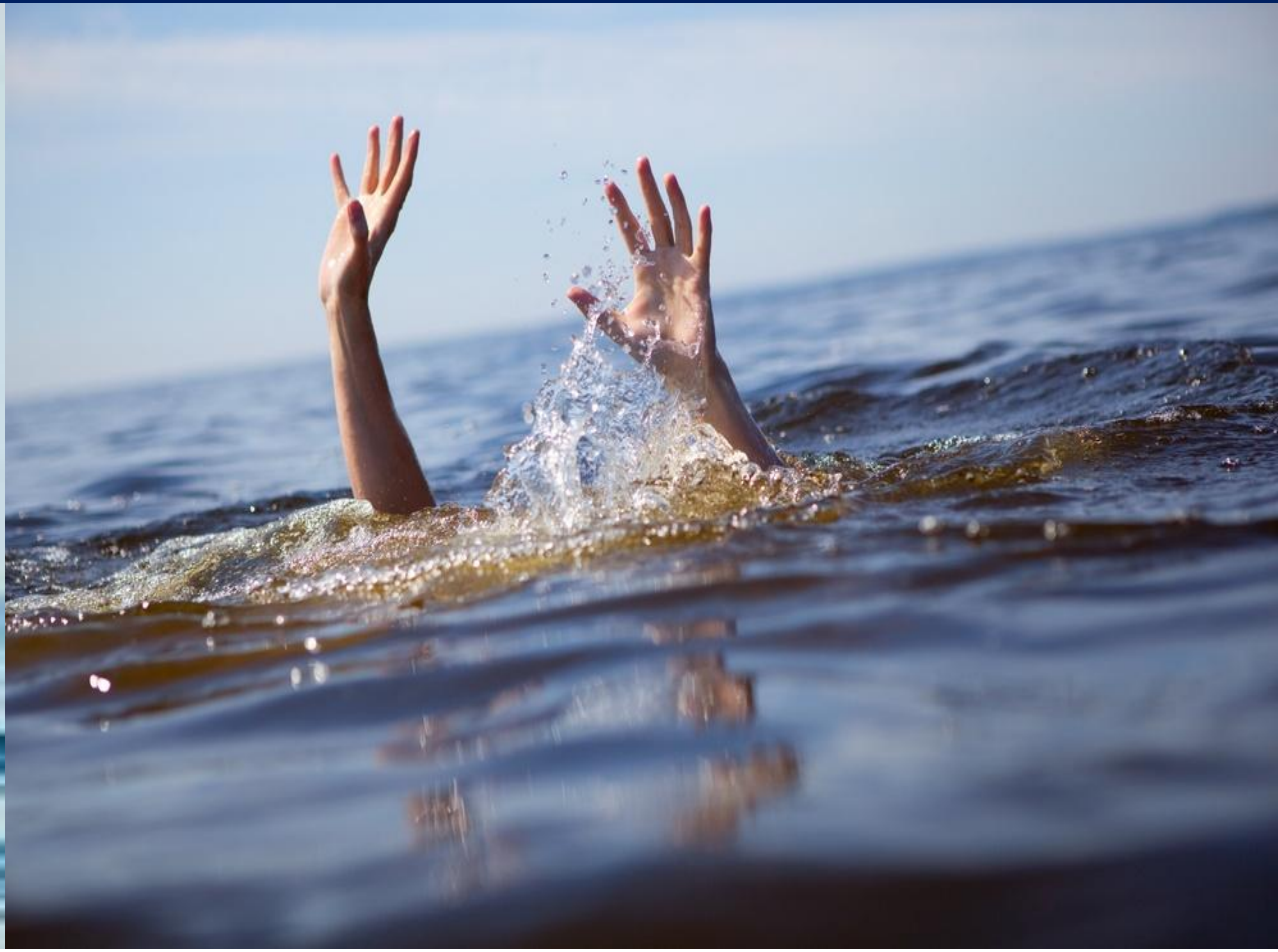

क्या करें और क्या ना करें

नाव पर पंजीकरण संख्या एवं यात्रियों की संख्या अंकित हो तो उसी नाव से यात्रा करें

जिस नाव पर लदान क्षमता दर्शाते हुये सफ़ेद पट्टी का निशान लगा हो उसी नाव से यात्रा करें

डूबने से होने वाली मौतों से बचने के उपाय

4 . बच्चों को पुल/ पुलिया/ ऊचें टीलों से पानी में कूदकर स्नान करने से रोकें

डूबने से होने वाली मौतों से बचने के उपाय

नदी में उतरते समय गहराई का ध्यान दें
बच्चों को नदियों/ तालाबों/ तेज पानी के बहाव में स्नान करने से रोकें

Road Safety

Some contributing factors for road accidents

THE JUMBO JET – FINALLY LANDED!

THE JUMBO JET

Poor visibility and no separate pathway for pedestrians

THE DEADLY JAW
Bankoboev.Ru

Animal Roaming on Roads

ANIMALS ROAMING ON ROADS

ROAD KING

Road Traffic Accidents

The leading cause of death of young people aged

16-35 years

A TWO-WHEELER IS NOT A TOY

What is Wrong Here?

What is Wrong Here?

Thank You